हाशियों में छिपा जादू

लेखन: डब्ल्यू. निकोल लीसा

चित्र: बॉनी क्रिस्टनसन

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

साइमन यतीम था, किसाानों के परिवार का बेटा। पर दिमाग उसका बेहद तेज़-तर्रार था। उसने जल्दी ही 'स्क्रिप्टोरियम' यानी सचित्र पोथियों के लेखन कक्ष के तौर-तरीके सीख लिए।

सीखने की उसकी रफ्तार इतनी तेज़ थी कि उसे लगने लगा कि वह अपने गुरु की पोथी में ख़ुद सजावट कर सकता है। चित्र आँक सकता है।

पर मठाधीश, फादर उसे कहते हैं कि उसे चूहों पर काबिज़ होना सीखना होगा।

लेखिका डब्ल्यू. निकोल लीस और चित्रकार बॉनी क्रिस्टनसन ने एक नायाब 'इल्युमिनेटेड' (सचित्र) पुस्तक रची है जो धैर्य, प्रतिभा और कल्पनाशीलता को समेटती है।

हाशियों में छिपा जादू

लेखन: डब्ल्यू. निकोल लीसा

चित्र: बॉनी क्रिस्टनसन

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

आमुख

जैसा कई बार होता है, इस क़िताब की प्रेरणा एक दूसरी क़िताब से मिली। एलिज़ाबैथ बी. विल्सन की रचना *बाइबल्स् एण्ड बैस्टिएरीस्: ए गाइड टू इल्युमिनेटेड मैन्युस्क्रिप्टस्* (1994) न्यू यॉर्क की पियरपॉन्ट मॉर्गन लाइब्रेरी की सहभागिता से तैयार की गई थी। मिज़ विल्सन ने इसमें एक चित्र शामिल किया जो सेंट ऑगस्टाइन की *सिटी ऑफ गॉड* से लिया गया है, जो तकरीबन 1140 ईस्वी की है।

यह चित्र क़ातिब (नकलनवीस/लिखने वाला) हिल्डेबर्टस् का है, जिसे एक तंग करने वाला चूहा नज़र आता है। चूहा उसके पनीर को चुरा रहा है। हिल्डेबर्टस् के चित्र के ठीक नीचे उसके एक युवा शाग़िर्द का चित्र है, जो अपने उस्ताद की परेशानी से बेख़बर चर्म-पत्र के हाशियों पर बनाए जाने वाले सजावटी नमूनों को आँकता जा रहा है।

हालाँकि चित्र में हिल्डेबर्टस् और चूहा ही हावी हैं, मैं उस युवा शाग़िर्द के बारे में सोचे बिना न रह सकी। वह मठ के स्क्रिप्टोरियम (लेखन-कक्ष) में कैसे आया? उसे कैसे शिक्षित या प्रशिक्षित किया गया? क्या वह कभी एक कुशल चित्रकार बन सका?

तमाम कहानियों की तरह यह कहानी भी उन सवालों से उपजी जो मेरे मन में कुलबुलाए थे।
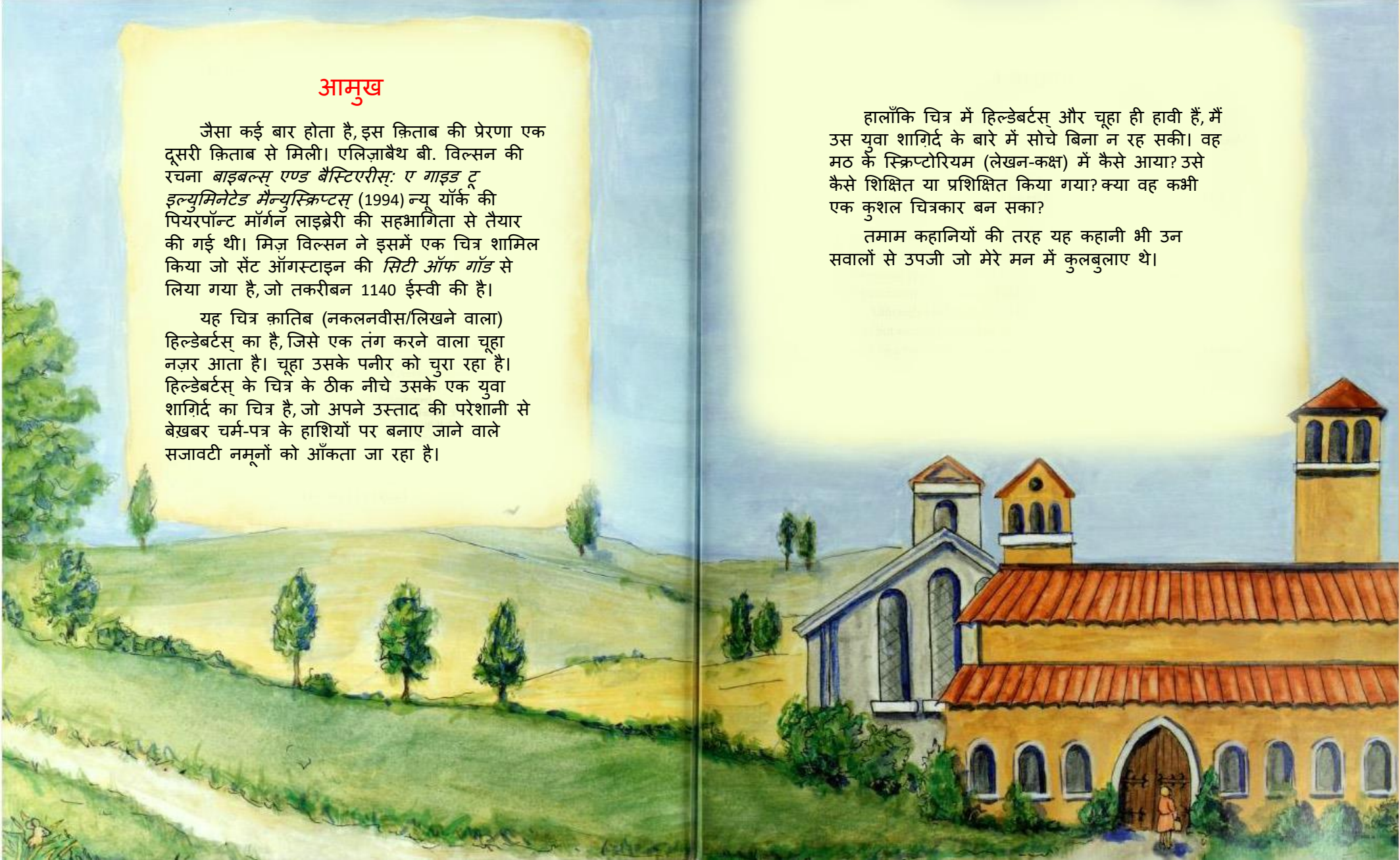
मध्ययुग में यह प्रथा आम था कि किसी सामन्त के बेटे को पढ़ाने-लिखाने के लिए चर्च में शामिल कर लिया जाए। कई अमीरज़ादों के लिए भी चर्च ही उनका घर होता था।

पर साइमन की बात जुदा थी। वह किसी सामन्त का बेटा नहीं था। वह तो यतीम और एक ग़रीब किसान परिवार से था। उसके माता-पिता बसन्त में आई बाढ़ में बह चुके थे।

पर साइमन चीज़ों को फुर्ती से समझता था और खासा चतुर भी था। इस कारण मठ के मंक (सन्यासी) उसे अपने मठ से निकाल न पाए, जहाँ वह एक दिन आ हाज़िर हुआ था।

साइमन को सिखाने-बुझाने का ज़िम्मा ब्रदर विलियम पर आन पड़ा था वे मठ के एक सन्यासी थे और एक उस्ताद स्क्राइब (क़ातिब) भी। वे लेखन-कक्ष में काम करते थे। ब्रदर विलियम की हिदायत में साइमन लेखन-कक्ष के तौर-तरीके सीखने लगा। भेड़ की खाल को सुखा और तान कर चर्म-पत्र कैसे बनाया जाता है, रंग बनाने के लिए उसे कैसे कूटा-छाना जाता है, और वर्णमाला के आखरों को ख़ुशख़त में कैसे उकेरा जाता है।

ब्रदर विलियम की रहनुमाई में साइमन ने अलग-अलग तरह की मैन्यूस्क्रिप्टस् (पोथियों) के बारे में जाना जो मठ के लेखन-कक्ष रखी, हाथ से लिखी गई क़िताबें थीं।

यह कि बैस्टियरी असली या काल्पनिक जानवरों की क़िताबें होती हैं।

यह भी जाना कि हर्बल पोथियों में औषधीय वनस्पतियों का ज़िक्र होता है। और सॉल्टर (भजनमाला) में बाइबल के गीत होते हैं।

साइमन जिज्ञासु शाग़िर्द था। वह चाहता था कि वह मठाधीश फादर एनसैल्म की, जो चित्रकारी में उस्ताद थे, मदद करे। वह मठ की किसी पोथी के लिए चित्र बनाना चाहता था।
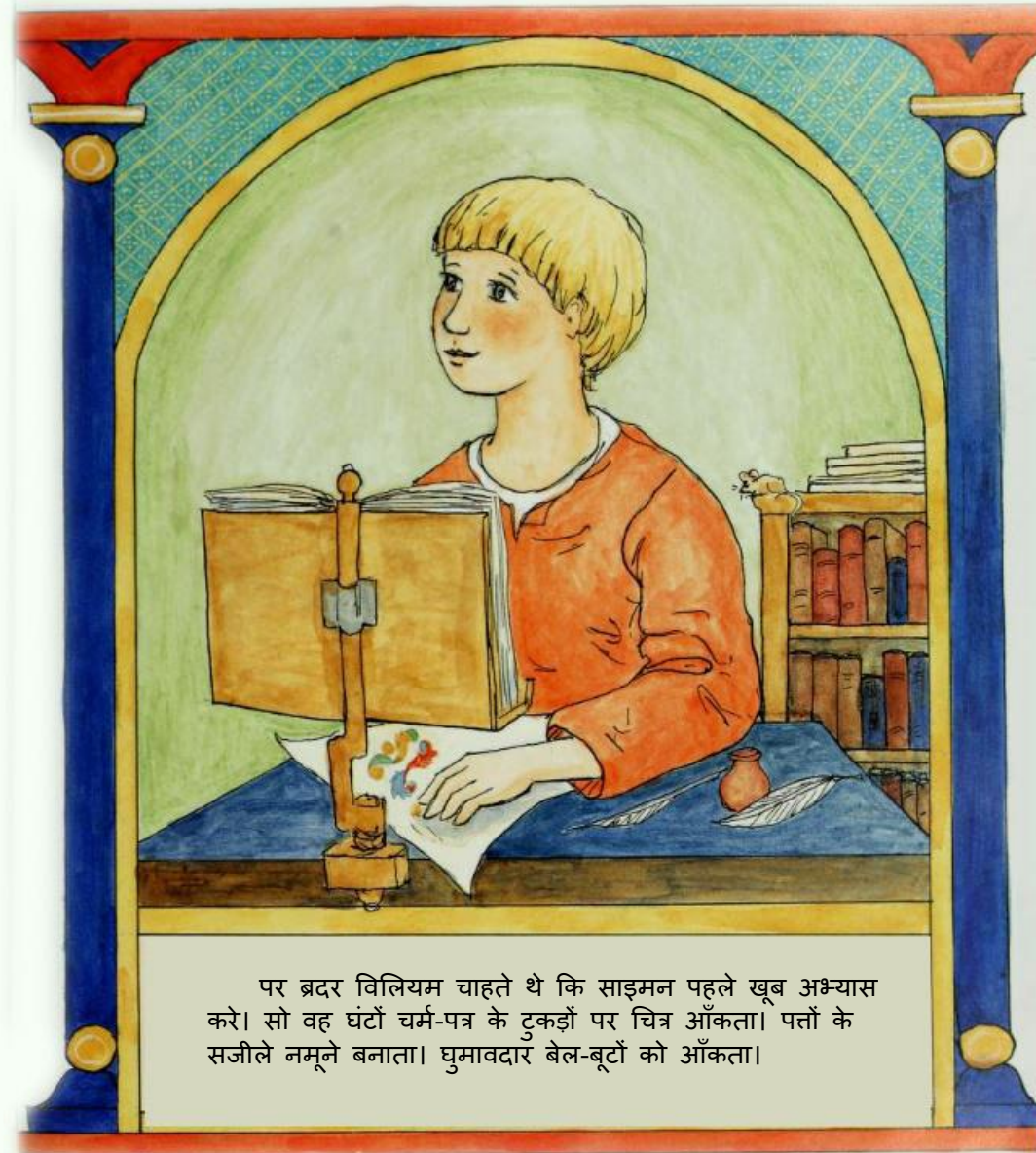
पर ब्रदर विलियम चाहते थे कि साइमन पहले खूब अभ्यास करे। सो वह घंटों चर्म-पत्र के टुकड़ों पर चित्र आँकता। पत्तों के सजीले नमूने बनाता। घुमावदार बेल-बूटों को आँकता।

एक दिन अपना अभ्यास पूरा करने के बाद साइमन ने ब्रदर विलियम से पूछा, "मैं फादर एनसैल्म की पोथी के लिए चित्र कब बना सकूँगा?"

"धीरज धरो साइमन," ब्रदर विलियम ने कहा। "पता है मुझे चर्म-पत्र की कतरनों के अलावा किसी भी चीज़ को छूने तक की इजाज़त सालों-साल बाद मिली थी। और तुमने तो किसी भी दूसरे शागिर्द से कहीं तेज़ी से तरक्की की है।"

"पर मैं चिन्दियों पर पत्तों के नमूने बनाने से ज़्यादा करने के लिए तैयार हूँ...।"

"बेशक, तुम बहुत लायक हो साइमन," ब्रदर विलियम ने उसे टोकते हुए कहा। "मुझे कोई शक नहीं कि किसी दिन तुम्हारे चित्र कई पोथियों में होंगे। पर यह फ़ैसला तो सिर्फ़ फादर एनसैल्म ही कर सकते हैं।

साइमन की नज़रें झुक गईं।

"पर तुम चाहो तो मैं फादर एनसैल्म से बात कर सकता हूँ।

साइमन की आँखें चमक उठीं।
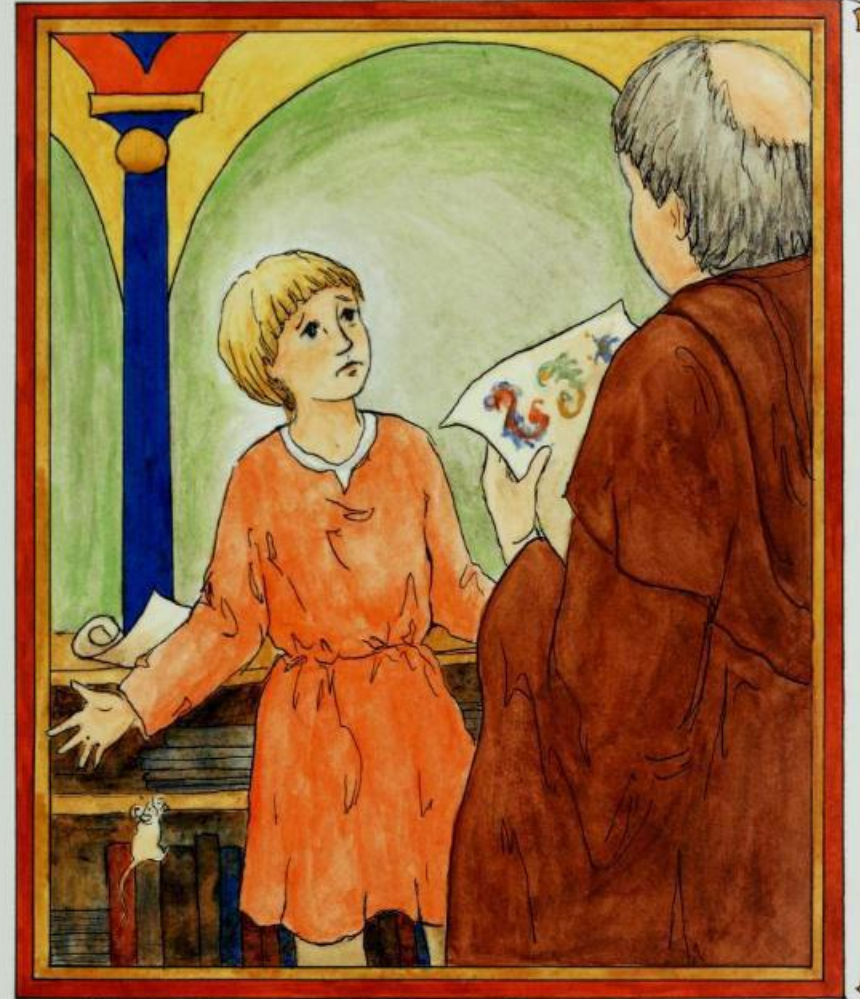
फादर एनसैल्म दुबले-पतले, पैने नाक-नक्श वाले शख़्स थे। वे सख़्त नज़र आते थे, पर थे बेहद होशियार और अक्लमन्द।

कई दिनों बाद ब्रदर विलियम ने साइमन को बताया कि वे फादर एनसैल्म से बात कर चुके हैं। यह भी कि मठाधीश उससे मिलना चाहते हैं। साइमन उत्तेजना से काँप उठा।

जब वे दोनों फादर एनसैल्म के कमरे में पहुँचे, फादर अपनी मेज़ पर बैठे थे। उनके हाथों में चर्म-पत्र के कई टुकड़े थे जिन्हें वे बारीकी से देख रहे थे।

''आहा साइमन,'' फादर ने नज़रें उठा कहा। ''मैं तुम्हारी ही राह देख रहा था। ब्रदर विलियम ने तुम्हारी चित्रकारी के कुछ नमूने मुझे दिए थे।''

साइमन यह देख हैरान हो गया कि उनके हाथों में जो चर्म-पत्र थे वे हाल में उसके ही बनाए गए चित्रों के थे।

''ब्रदर विलियम कहते हैं कि तुम एक बेहतरीन शाग़िर्द हो,'' उन्होंने बात जारी रखी।

साइमन ने झिझकते हुए सिर हिलाया।

''यह भी कि तुम मेरी किसी पोथी में चित्र बनाना चाहते हो।''

साइमन ने फिर हामी में सिर हिलाया।

"तुम्हारे चित्र काफ़ी अच्छे हैं," फादर एनसैल्म ने जोड़ा। "तुम्हारी निगाहें पैनी हैं और तुम किसी भी चीज़ की नकल बना लेते हो। पर सिर्फ हुनर काफ़ी नहीं होता साइमन। एक कलाकार बनने के लिए हुनर के साथ नज़र भी होनी चाहिए।"

"नज़र?" साइमन ने पूछा।

"बिलकुल, उम्दा कलाकार वह नहीं होता जो चित्रों की हू-ब-हू नकल बना सके। उम्दा कलाकार अपनी कल्पना से नई, शानदार छवियाँ रचता है।"

साइमन ने यह जताने के लिए सिर हिलाया मानो वह बात समझ रहा हो।

"पोथी को हाथ लगाने के पहले तुम्हें अपनी काबलियत दिखानी होगी।"

"वह भला कैसे?"

"चूहों पर काबिज़ होकर साइमन!" फादर एनसैल्म ने ज़ोर देते हुए कहा।

"उन्हें पकड़ कर?"

"हाँ भई। फिलहाल मठ में उनका आतंक फैला हुआ है। तुम जितने हो सके उतने चूहों पर कब्ज़ा करो। पर एक बात से आगाह करवा दूँ," उन्होंने जोड़ा। "चूहे चालक होते हैं। तुम्हें उनका अध्ययन करना होगा। उन्हें अन्दर और बाहर से जान लेना होगा। और याद रहे अपनी कल्पना का इस्तमाल भी करना होगा।"
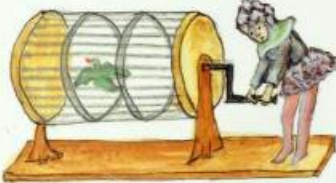
अगले कुछ सप्ताह साइमन चूहों को धर-पकड़ने की कोशिश में लगा रहा। वह उनके पीछे भागा, उन पर कूदा। चर्म-पत्र के टुकड़े उनकी ओर फेंके। उन्हें पकड़ने के लिए पिंजड़े लगाए, जाल बिछाए। पर यह काम उसने जितना सोचा था उससे कहीं ज़्यादा कठिन था।

एक दिन साइमन लेखन-कक्ष में बैठा चर्म-पत्र की एक कतरन पर पत्तों के नमूने आँक रहा था। इतने में उसे कुछ फीट की दूरी पर एक चूहा नज़र आया। चर्म-पत्र को नीचे धर साइमन उस छोटे-से जीव पर उछला। पर वह चमकदार आँखों वाला चूहा बच निकला। साइमन फर्श पर तब औंधे मुँह पड़ा था जब दरवाज़ा फटाक से खुला।

"फादर एनसैल्म!" आँखें उठा ऊपर देखते ही साइमन के मुँह से बरबस निकला।

"साइमन?" फादर ने चौंक कर कहा।

"दरअसल मैं चूहे को पकड़ने की कोशिश कर रहा था," साइमन ने हकलाते हुए सफ़ाई दी। "जैसे आपने हिदायत दी थी।"

"पर मैंने तो तुम्हें चूहे को पकड़ने को नहीं कहा था," एक पल चुप रह फादर एनसैल्म बोले, "मैंने तुम्हें उन पर काबिज़ होने को कहा था। दोनों में काफ़ी फ़र्क है।"

इतना कह वे आगे बढ़ गए।

"उनका मतलब भला क्या है?" साइमन ने ब्रदर विलियम से बाद में तब जानना चाहा जब वे लेखन-कक्ष में आए। "पर मैंने तो तुम्हें चूहे को पकड़ने को नहीं कहा था ... उन पर काबिज़ होने को कहा था? क्या दोनों एक ही बात नहीं है?"

ब्रदर विलियम ने पल भर सोचा। "लगता है फादर एनसैल्म ने तुम्हें बूझने को एक पहेली दी है। मेरी सलाह है कि तुम उनके हरेक लफ़्ज़ के हिसाब से चलो। उन्होंने जो कुछ कहा था वह सब याद है ना तुम्हें।"

"जी हाँ," साइमन ने जवाब में कहा। "चूहों पर काबिज़ होने के लिए मुझे उनका अध्ययन करना होगा, उन्हें अन्दर और बाहर से जानना होगा, और अपनी कल्पना का इस्तमाल करना होगा।"

"ओह," उलझन से सिर खुजलाते ब्रदर विलियम ने कहा। "सच यह एक पहेली ही है।"

उस रात साइमन अपने बिस्तर पर लेटे फादर एनसैल्म के राज़ से भरे लफ़्ज़ों के सिवा कुछ और सोच ही नहीं पा रहा था। वे उसके दिमाग में घुमड़ रहे थे कि अचानक उसने दूर कोने में एक थरथराते चूहे को देखा।

साइमन ने मुड़ कर उस पर नज़र डाली ही थी कि फादर के लफ़्ज़ दिमाग में फिर कौंधे। "तुम्हें उनका अध्ययन करना होगा, उन्हें अन्दर और बाहर से जानना होगा।"

साइमन ने अपनी आँखें उस नन्हे-से जीव पर गड़ाईं। वह उसकी हरेक बारीक़ी, हरेक हरकत पर ग़ौर करने लगा। वह यह देख अचरज से भर गया कि चूहा कितना चौकन्ना, किस कदर सावधान था। हल्की सी आहट पर किस तरह फड़क उठता था। और तब किस फुर्ती से पलटा और ग़ायब हो गया था!

साइमन ने ये तमाम ख़याल दिमाग में दर्ज किए। तब वह सोने के कमरे से निकला और दबे पाँव लेखन-कक्ष में चला आया। चाँद की रुपहली रोशनी में तर-बतर साइमन ने चर्म-पत्र का एक पुलिन्दा उठाया और जितने हो सके उतने चित्र आँके। इसके बाद वह सोने के कमरे में लौटा और गहरी नींद में डूब गया।

अगली सुबह साइमन को ब्रदर विलियम बाहर चौक में मिले। "ब्रदर विलियम," वह जोश में चीखा, "मैं समझ गया! मैंने बूझ लिया!"

"क्या समझ-बूझ गए?" ब्रदर विलियम ने जानना चाहा।

"फादर एनसैल्म की पहेली बूझ ली है मैंने।" साइमन ने उत्साह से कहा।

"और वह भला क्या थी?"

'"वे यह देखना चाहते थे कि मैं चूहों को कितनी अच्छी तरह आँक सकता हूँ। काबिज़ होना से यही मतलब था उनका।"

'मुझे ये चित्र फादर एनसैल्म को दिखाने हैं!" ब्रदर विलियम कुछ कहें इसके पहले तो साइमन मुड़ा और तेज़ी से भाग खड़ा हुआ।

वह फादर एनसैल्म के कमरे की ओर दौड़ लगा रहा था। पर इबादत घर के मोड़ पर वह घूमा ही था कि वह फादर से जा टकराया।

“अरे लगाम लगाओ बेटे!” मठाधीश ने सख्ती से कहा। “मठ दौड़ने की जगह नहीं है।”

“माफ़ी चाहता हूँ फादर,” साइमन ने कहा। “पर मैं आपसे ही मिलने आ रहा था। मैंने आपकी पहेली बूझ ली है।”

“ओह, ऐसा क्या?” फादर एनसैल्म बोले। “और जो तुम समझे वह भला क्या है?”

साइमन ने कमर पेटी में खोंसा चर्म-पत्र का पुलिन्दा निकाला और फादर को अपने बनाए चित्र थमा दिए।

फादर एनसैल्म ने बड़ी देर तक चित्रों को ध्यान से देखा-परखा। “बेहद सुन्दर तस्वीरें बनाई हैं तुमने,” वे आख़िरकार बोले। “अपने विषय का ठीक से अध्ययन करने, उसे अन्दर और बाहर से जान लेने की बात तुम बेशक समझ गए हो। फिर भी पहेली को पूरी तरह बूझ नहीं पाए हो।”

“ओह!” साइमन ने निराशा से भर कहा।

“देखो, पहेली के दो हिस्से हैं। पहला तुमने बूझ लिया। पर दूसरा हिस्सा है अपनी कल्पना का इस्तमाल करने का - वह तुम्हारी पकड़ में नहीं आया है,” साइमन को उसके चित्र वापस लौटाते फादर एनसैल्म ने कहा। और साइमन को सोच में डूबा छोड़ चले गए।
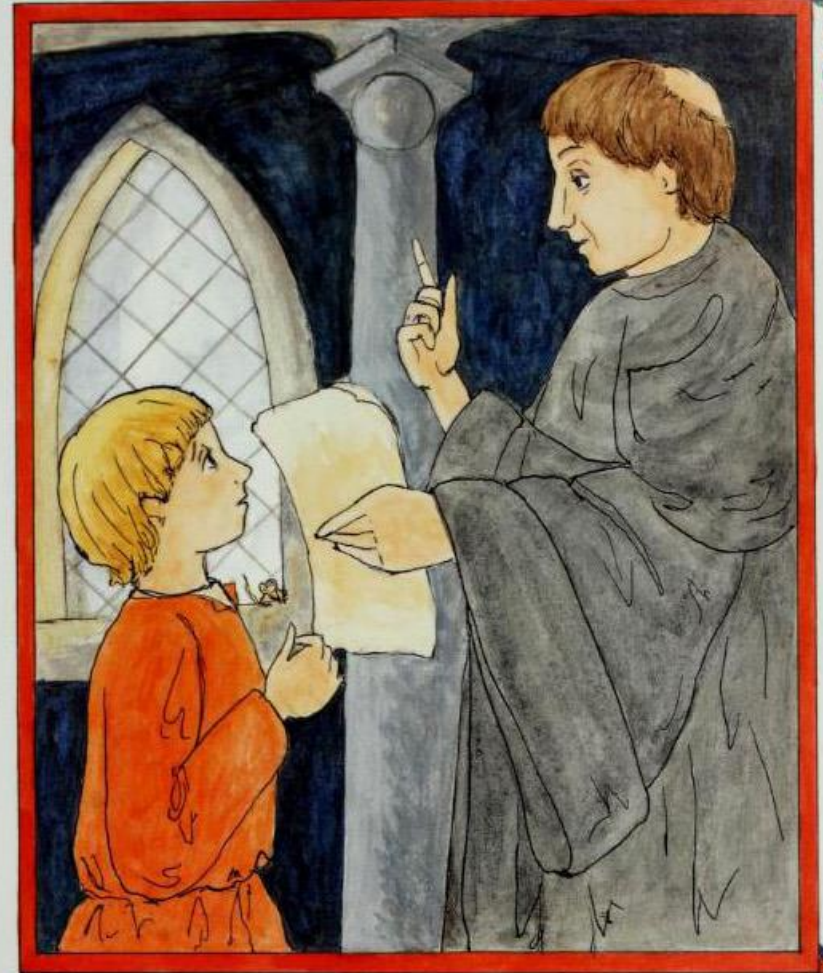
शाम की प्रार्थना के बाद सोने के कमरे में जाने के बदले साइमन गुपचुप लेखन-कक्ष की ओर चल दिया, ताकि फादर एनसैल्म की बात पर ठीक से सोच सके। दहलीज पार कर वह कमरे को ग़ौर से देखने लगा। वहाँ ब्रदर विलियम की मेज़ थी, स्याही से भरी दवातों की कतार थी, दूर वाली दीवार से सटी कई अल्मारियाँ थीं।

इन अल्मारियों में मठ की पोथियाँ सजी थीं। साइमन दिन में कई बार उनके सामने से गुज़रा था। पर अब रात में मानो वे उसे बुला रही थीं। हालाँकि फादर एनसैल्म की इजाज़त के बिना उसे यह करना नहीं चाहिए था, पर उसने खुद को फ़र्श पर पसरे सबसे मोटी पोथी के पन्ने पलटते पाया।

उसने एकसार सलीके से बने आखरों की धारा पर ग़ौर किया। उसने चटक रंगों में सजे चित्रों को देखा। बारीकी से उकेरे गए पेचीदा नमूनों से सजे शीर्षकों को देखा।

पर उसकी नज़र आख़िर जहाँ जा कर टिक गई, वे थे हाशिए। हाशियों पर ऐसी लाजवाब चित्रकारी थी जैसी उसने पहले देखी न थी।

उसे याद आया कि ब्रदर विलियम ने कहा था कि "एक पोथी को तैयार करना तकलीफदेह तरीके से धीमा काम होता है। हरेक लफ़्ज़ को, एक-एक आखर की सावधानी से नकल कर उसे लिखा जाता है। हरेक चित्र को उकेरे जाने के पहले उसकी योजना बनाई जाती है। पूरा काम बेहद थकाऊ होता है, फिर भी विनोद के बिना नहीं होता।"
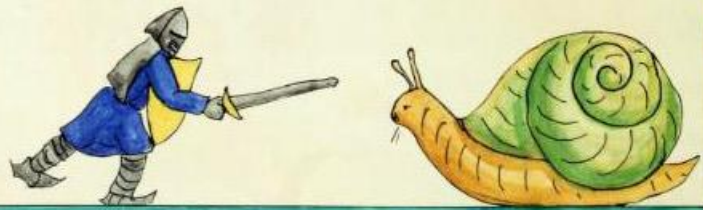
इसे ध्यान में रख साइमन हाशिए पर बने चित्रों को ग़ौर से देखने लगा।

कैसा हास्य-विनोद छिपा था उन हाशियों में। किस कदर खिलन्दड़पन। और कैसी कल्पना!

अचानक साइमन रुक गया। क्या यही फादर एनसैल्म का मलतब तो नहीं था, जब उन्होंने कहा था कि सबसे बड़े कलाकार वे नहीं होते जो चित्रों की हू-ब-हू नकल कर सकें। बल्की वे होते हैं जो अपनी कल्पना से अद्भुत छवियाँ उकेरते हैं।

साइमन यह सोच ही रहा था कि उसकी नज़र फादर एनसैल्म की मेज़ के नीचे दुबके एक चूहे पर पड़ी, जिसकी मूंछें फड़क रही थीं।

साइमन बिना हरकत किए बुत बना बैठे-बैठे उसे तब तक घूरता रहा, जब तक वह भाग न गया।

इसके बाद साइमन ने चर्म-पत्र लिया और उस पर दनादन चूहे आँकने लगा। वैसे नहीं जैसे कुछ पल पहले उसने चूहे को देखा था - बल्की जैसे वह उसे अपनी कल्पना में देख रहा था।
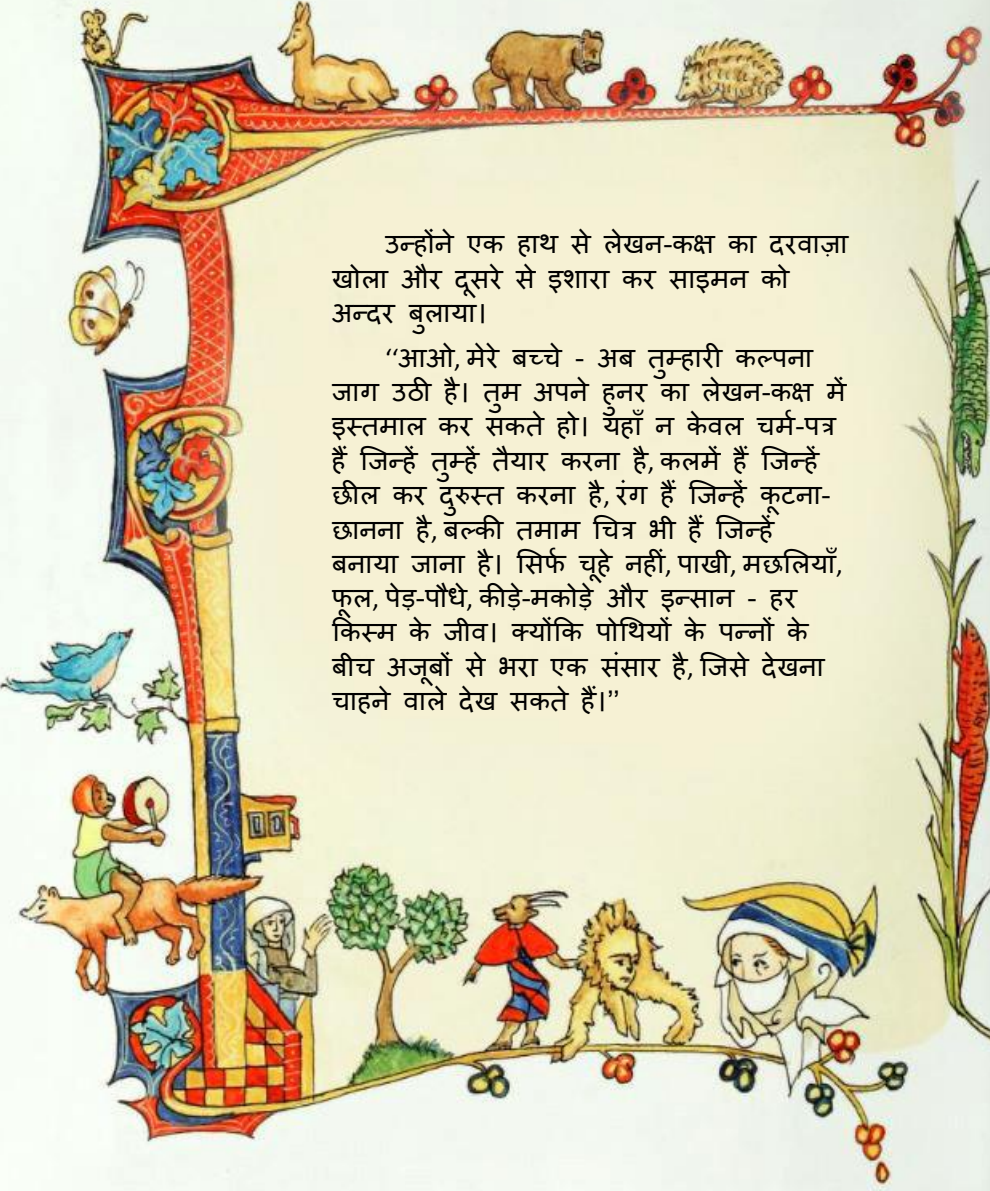
साइमन चित्र पर चित्र आँकता गया, जब तक वह चर्म-पत्र पूरा भर न गया। अगली सुबह वह फिर फादर एनसैल्म की तलाश में निकला। इस बार वह दौड़ा नहीं, बड़ी सावधानी से चला। लेखन-कक्ष के बाहर ही फादर ब्रदर विलियम से बतियाते दिखे।

साइमन मुँह से कुछ न बोला। अपनी पेटी में खोंसे चर्म-पत्र को निकाला, खोला और मठाधीश को थमा दिया।

वह साइमन के चित्रों से पटा हुआ था।

फादर एनसैल्म बड़ी ध्यान से उसे देखने लगे। उनके होठों पर बरबस एक मुस्कान खिंच आई। "शाबास बेटे!" वे बोले। "बहुत खूब! अब तुम मेरी बात पूरी तरह समझ गए हो।"

उन्होंने एक हाथ से लेखन-कक्ष का दरवाज़ा खोला और दूसरे से इशारा कर साइमन को अन्दर बुलाया।

“आओ, मेरे बच्चे - अब तुम्हारी कल्पना जाग उठी है। तुम अपने हुनर का लेखन-कक्ष में इस्तमाल कर सकते हो। यहाँ न केवल चर्म-पत्र हैं जिन्हें तुम्हें तैयार करना है, कलमें हैं जिन्हें छील कर दुरुस्त करना है, रंग हैं जिन्हें कूटना-छानना है, बल्की तमाम चित्र भी हैं जिन्हें बनाया जाना है। सिर्फ चूहे नहीं, पाखी, मछलियाँ, फूल, पेड़-पौधे, कीड़े-मकोड़े और इन्सान - हर किस्म के जीव। क्योंकि पोथियों के पन्नों के बीच अजूबों से भरा एक संसार है, जिसे देखना चाहने वाले देख सकते हैं।”

“और साइमन उस दुनिया को उजागर करने में अब तुम मदद करोगे!”

उपसंहार

मध्ययुग रोमन साम्राज्य के पतन से लेकर पुनर्जागरण काल तक, एक हज़ार वर्षों का माना जाता है। इस दौरान हाथ से बनाई गई क़िताबें जिन्हे 'इल्यूमिनेटेड मैन्युस्क्रिप्टस्' कहा जाता था, इतिहास को दर्ज करने, उसे सुरक्षित रखने का सबसे महत्वपूर्ण ज़रिया था।

साइमन इसी युग का था, ग्यारहवीं शताब्दी के मध्य का। उस समय पोथियाँ धार्मिक समुदायों के मठों के रहवासी 'मंक' यानी सन्यासियों द्वारा तैयार की जाती थीं। वे इसलिए ज़रूरी थीं क्योंकि वे चर्च की कहानियाँ कहती थीं और इतिहास को दर्ज करती थीं। साथ ही वे चर्च की धार्मिक आस्थाओं को फैलाने में भी मदद करती थीं।

यही कारण था कि वे बड़ी सावधानी से तैयार जाती थीं। उन्हें तैयार करते वक़्त कुछ नियमों का सख़्ती से पालन किया जाता था। खास कर जब चित्र बनाए जाते थे। क्योंकि चित्र महज सजावट के लिए नहीं होते थे, वे प्रतीकात्मक भी हुआ करते थे। मतलब हरेक चित्र एक कहानी बयान करता था: यीशू के जन्म की, किसी सन्त के जीवन की, चर्च के इतिहास की किसी घटना की। उस समय आम जनता पढ़-लिख नहीं सकती थी। सो चित्र ही उन तक बात/संदेश पहुँचाने का मुख्य ज़रिया थे।

तो इन विचारों को तरतीब से दूसरों तक पहुँचाने के मकसद से कुछ प्रशिक्षित सन्यासी पन्नों की सजावट करते थे। इन्हें 'इल्यूमिनेटर' यानी चित्रकार कहा जाता था। ये चित्रकार कुछ नियमों या रिवायतों का सख़्ती से पालन करते थे। इनमें कुछ बारीकियाँ शामिल होती थीं जैसे संत के हाथ की मुद्रा, उसके हाथों में थामी हुई चीज़ें, उनके वस्त्रों का रंग। इनकी हू-ब-हू नकल की जाती थी। ठीक उस तरह जिस तरह पोथी के लिखित भाग का एक-एक अक्षर सावधानी से नकल कर एक से दूसरी पोथी में उतारा जाता था। ज़ाहिर है यह पोथियों को तैयार करने की प्रक्रिया को धीमा और उबाऊ बनाता था।

पर इल्यूमिनेटर कलाकार थे और कलाकारों को अपनी रचना में आज़ादी चाहिए होती है। तो यह रचनात्मक आज़ादी कलाकार कहाँ अभिव्यक्त कर सकता था? क्योंकि लिखित हिस्सा पहले से मौजूद किसी पोथी से हू-ब-हू उतारा जाता था और मुख्य चित्र सख़्त परिपाटियों के हिसाब से बनाए जाते थे, तो इल्यूमिनेटर अपनी कल्पना को कहाँ और कैसे उड़ने देता होगा?

अपनी कल्पना को आज़ादी से उड़ने देने के कई स्थान थे। नवाचार के साथ किए गए भूल-सुधार, जो कई बार बड़े मज़ाकिया तरीके से दो पंक्तियों के बीच किए जाते थे। या जब लिखित पाठ का काफी हिस्सा हाशियों की अनदेखी करता हो, तो खाली स्थान को भरने के लिए मोहक नमूने बनाए जाते थे जो छोटी पंक्ति को बढ़ा कर हाशिए तक ले आते थे। या पन्ने के बीच के पाठ को घेरती हाशियों पर बनी आकृतियाँ और बेल-बूटों के नमूने।

इन हाशियों में इल्यूमिनेटर अपनी कल्पनाशीलता को पूरी छूट देता था। यहाँ उसकी रचनात्मकता बेरोकटोक बह सकती थी। हाशियों में ही साइमन को फादर एनसैल्म की पहेली का जवाब मिला था।